ISSN 2320-6263 | UGC APPROVED JOURNAL NO 64395
RNI REGISTRATION NO MAHMUL/2013/49893

RESEARCH ARENA

A MULTI-DISCIPLINARY INTERNATIONAL REFEREED RESEARCH JOURNAL

Vol 5 Issue 11 February 2018

समकालीन कविता: एक अध्ययन

SPECIAL ISSUE NO. 2

संपादक
डॉ. प्रकाश बन्सीधर खुळे
सह संपादक
डॉ. रामचंद्र ज्ञानोबा केदार

१४. समकालीन हिंदी कविता
प्रा. डॉ. रेखा मुळे (कैवाडे)
१०२-१०६

१५. समकालीन हिंदी कविता
डॉ. दत्ता शिवराम साकोळे
१०७-११०

१६. समकालीन हिंदी गजल साहित्य
प्रा. डॉ. एम.ए. येळूरे
१११-११५

१७. काम संबंधों के यथार्थ पर टिका समकालीन नाटक : सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक
डॉ. आप्पासाहेब टाळके
११६-१२१

१८. समकालीन हिंदी ग़ज़लों में आर्थिक चेतना विशेष संदर्भ – डॉ. कुँअर बेचैन की ग़ज़लें
प्रा. डॉ. बंग नरसिंगदास ओमप्रकाश
१२२-१२६

१९. समकालीन हिंदी कविता
डॉ. गोविंद पांडव
१२७-१३०

२०. समकालीन नाटककार डॉ. शंकर शेष के नाटकों की मौलिकता
प्रा.संजय व्यंकटराव जोशी
१३१-१३६

VISHWABHARATI
RESEARCH ARENA
ISSN 2320-6263
Vol 5. Issue 11. Feb 2018. pp. 131-136
Paper received: 01 Feb 2018.
Paper accepted: 16 Feb 2018.
© VISHWABHARATI Research Centre

समकालीन नाटककार डॉ. शंकर शेष के नाटकों की मौलिकता

प्रा.संजय व्यंकटराव जोशी

'शंकर शेष' प्रतिभासंपन्न नाटककार थे हिन्दी साहित्य में उनको नाटक विद्या के धनी के रुप मे पहचाना जाता था। सन १९६० के बाद समकालीन साहित्य की प्रवृत्ति का बोलबाला शुरू था। उसमें आठवे दशक के अंतर्गत शेष जी की पहचान नाट्य जगत में रही है। समकालीन नाटककारों में शिल्प, कथ्य, अभिनय, भाषा, मंच, संप्रेषण इत्यादी के दृष्टि से प्रयोगधर्मी नाटककार के रूप में आप सिध्द हुए है रंगधर्मी नाटककार के रुप में शेषजी की पहचान रही है जिन्होंने नाटक और रंगमंच के संबंध में मौलिक रुप से विचार किया है। नाटक, एकांकी, बालनाटक, उपन्यास, कथा आदि विधाओं में आपने लेखन किया आपकी पहचान उन नाटककारों में की जाती है। जिससे नाटक विधा मजबूत बनी इनमें डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल, धर्मवीर भारती, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, जगदीश चंद्र माथूर, विनोद रस्तोगी, दयाप्रकाश सिन्हा, ज्ञानदेव अग्निहोत्री आदि आते है। स्वातंत्र्योत्तर प्रयोगशील नाटककारों की श्रेणी में 'शंकर शेष' के रंगमंचीय कार्य को गिना जाता है। सन १९५५ से सन १९८१ तक नाटक रचना के विकास के लिए आप लेखन करते रहे है।

प्रा. संजय व्यंकटराव जोशी : हिन्दी विभाग, व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ महाविद्यालय, उस्मानाबाद

नाटक सहित्य का अध्ययन साहित्य की अन्य विद्या के अध्ययन से काफी रोचक एवं सार्थक है। क्योंकि नाटक जीवन का जीतना प्रतिबिंब है। उतना सम्भवता साहित्य की अन्य कोई विद्या नहीं लेकिन हिन्दी साहित्य की अन्य विद्याओं की अपेक्षा नाटक का विकास मंदगति से हुआ है। वैसे नए नाटक के लिए नई कविता और कहानी के साथ इसके प्रति भी रोचकता साहित्यकारों में बढी और इसका आधुनिक विकास होता गया।

हिन्दी नाटक साहित्य में नए नाटक का अंकुर तो सबसे पहले 'जगदीशचंद्र माथुर' के कोणार्क में दिखाई देता है। आगे चलकर नाटक की जीवन यात्रा 'धर्मवीर भारती' के नाटक 'अंधायुग' से है। उसके बाद नई प्रवृत्तीयों का उपक्रम 'मोहन राकेश' के द्वारा शुरू हुआ और 'डॉ.शंकर शेष' ने इसे आगे बढाया हिन्दी नाट्य साहित्य में 'डॉ.शेष' जी के नाटकों का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। उनका एक भी नाटक ऐसा नहीं जिनमें नए नाटक की प्रवृतियाँ दिखाई न देती हो।

'डॉ.शंकर शेष' नें अपने लगभग सभी नाटकों में विभिन्न विचारों को प्रस्तुत किया है। जिनमें कहीं वे राजनीति, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृति विचारधारा का वर्णन करते है। प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रुप से सभी विषयों की जानकारी उन्होंने अपने साहित्य में प्रस्तुत की है। मानव के हर पहलू को वे इन विषयों के माध्यम से पाठक और दर्शकों के सामने लाना चाहते है। 'शेषजी' ने 'मूर्तिकार' नाटक से लेकर 'आधी रात के बाद' नाटक तक विभिन्न विषयों का जिक्र है।

'डॉ.शंकर शेष' के विभिन्न नाटकों के पात्रों का विवेचन यहाँ किया जा रहा है। जो चरित्र नाटकों में मानव जीवन की यथार्थता को प्रस्तुत करने का प्रयास करते है। 'मूर्तिकार' नाटक से लेकर 'आधी रात के बाद' नाटक तक के विभिन्न चरित्रों के माध्यम से व्यक्ति जीवन का चित्रण यहाँ प्रस्तुत है। 'मूर्तिकार' नाटक का 'शेखर' और 'ललिता' सामान्य दाम्पत्य जीवन का उदाहरण है। जिसको समाज जीने नहीं देता है। ऐसा समाज जिस समाज के लोग कलाकारों का शोषण करते है। यह समाज के वे लोग है। जो शोषक है। शोषण किया करते है। सतीश, मुन्शी ऐसे लोग है। जो शेखर, अनादी जैसे सामान्य लोगों को आगे आने नहीं देते है। उनकों बहकाने की कोशिश करते है।

''सामान्य जीवन में मनुष्य आदर्श पर टिक नही सकता आखिर उसे समझौता करना ही पडता है।'मूर्तिकार' में नाटककार 'शेष' ने नारी जीवन का चित्रण कर

स्वतंत्रता का संदेश दिया है।''

'नई सभ्यता के नये नमूने' के रुप में 'शंकर शेष' ने मिथकिय पध्दति से नाटकों का चित्रण किया है। इसमें 'कृष्ण' ऐसे समाज का प्रतिक है। जिस समाज में सामान्य लोगों का जिना कठिन है। समाज ऐसे लोगों को जिने नहीं देता हजारो कठनाइयों से सामना उनको करना पडता है। और तब जाके ये जीने की कोशिश करते है। धरनी, स्मृति, भूलवूप्रसाद जैसे समाज के ऐसे पात्र है। ऐसो को त्रस्त करना अपना मतलब निकालना यह बात 'कृष्ण' ने इसी समाज से सिखी है। इसलिए 'कृष्ण' ऊधौ चरित्र समाज के परिस्थितीयों की देन है।

''आज की सभ्यता भी तो उसी को कहते है। जिसमें मुस्कारा मुस्कराकर आप किसी का गला काट लीजिये आज यह पहचानना मुश्किल हो गया है। कि किसी मुस्कराहट में अमृत है और किसके मुस्कुराहट मैं जहर.'' आज इन्सान नई सभ्यता की आड में अपने आपको बेचता चला जा रहा।

'तिल के ताड' का मजबूर 'प्राणनाथ' ऐसा पात्र है। जिसको मजबूर होकर – ूठ का सहारा लेकर 'धन्नामल' को फँसाकर झूठ बोलकर रहना पडता है। 'मंजू' इसी समाज के ऐसे लोगों से त्रस्त है। उसके पीछे गुण्डे लगे है। जिसके कारण उसको 'प्राणनाथ' के साथ रहकर उसका साथ देना पडता है। यही बात ही अंत मे 'तिल का ताड' सिध्द होती है।

''डॉ. शंकर शेष ने 'प्राणनाथ' के माध्यम से प्रेमी युगलो की क्षणिक भावुकता का चित्रण किया है। यह प्रेम संबंधो की कथा को लेकर चलने वाली नाट्यरुचना है। इसमे नाटककार ने हमारी सामाजिक स्थिती, पर संकिर्ण मनोवृति जैसी बातो पर अपनी राय व्यक्त की है।''

समाज में रहनेवाले परिवारों में कुछ ऐसे भी परिवार है। जिसमें 'बिन बाती के दीप' के समान 'शिवराज' जैसे लोग रहते है। जो झूठी प्रतिष्ठा और धन के लिए रिश्ते नातो का खून करते है। और अपने जीवन संगीनी को धोका देते है। 'विशाखा' का अंधापन उसके पति के कुकर्म का ही परिणाम है। लेकिन फिर भी उसका 'शिवराज' को माफ करके उसको स्वीकार करना भी इसी समाज के नारी संस्कारों और मध्यवर्गीय जीवन प्रणाली का परिणाम है।

'बंधन अपने अपने' का 'डॉ.जयंत' ऐसे महत्वकांक्षी पुरूष का उदाहरण है। जो समाज में रहनेवाले ख्वाबो में खोये हुऐ लोगों का प्रतिक है। जो केवल अपने

एकाकी जीवन में खोया हुआ है। जिसको आखिर में अकेला ही रहना पडता है। समय में उनके अपने परिवार के सदस्य भी काम नहीं आते है। ''नाटक नाटककार ने प्रस्थापित शिक्षा व्यवस्था मे निहित असंगतियों का उद्‌घाटन कर शिष्य की प्राचीन परम्परा के विषय के संदर्भ में चिंता व्यक्त की है। शिक्षा व्यव में सम–ौते की बढती प्रवृत्ति का उद्‌घाटन पाठकों को अन्तर्मुख करता है।''

'फन्दी' का सामान्य वर्ग का'फन्दी' जिसको मजबूर होकर अपने पिता हत्या करनी पडती है। ऐसा इन्सान है। जो इसी सामाजिकता से ही जन्मा हुआ कई परिश्रम के बाद भी वह अपने पिता का इलाज नही कर पाता थककर पिता कहनेपर उनका गला घोटकर मारता है। और उसका मुकदमा अदालत में जाता जहाँपर कानूनी चाले है। यहाँ पर मजबूर चरित्रों का चित्रण दिखाई देता है।

'एक और द्रोणाचार्य' का मजबूर व्यक्तित्व जिसमें महाभारत कालीन 'द्रोणाचार्य' को नाटक के माध्यम से एक हताश व्यक्तित्व के रुप में प्रस्तुत किया गया है। आधुनिक कालीन 'अरविंद' के रुप में प्रस्तुत है। 'द्रोणाचार्य' सब अन्याय हो देख कुछ नही कर सकते कौरवों का अत्याचार केवल देखते रहते है। वैसे ही 'अरविंद' भी 'प्रेसिडेंट' और उनका पुत्र 'राजकुमार' के षडयंत्र को देखते हुए भी कुछ नहीं कर सकता मजबूरी में उनको रहना पडता है। समाज में वर्गभेद जीवन की विडम्बनला है। दलित जीवन आधुनिक चेतना मानी जाती है।

'घरौंदा' का 'सुदीप' भी महत्वकांक्षी और स्वार्थ से जीनेवाला समाज की ही उपलब्धी है। जिसमें रहनेवाले अपनी आवश्यकताओं से अधिक चाह जीवन से रखते है। और अपराधी बन जाते है। दूसरों का जीवन बर्बाद करने पे मजबूर होते है।

''बीमारी, गरीबी अपने आप में एक बीमारी है। एक कमजोरी है। यह किसी अच्छि चीज को पनपने नहीं देती रोटी और कपडा जुटाने में ही पूरी ताकत चूस लेती है। उन शक्तियों का आभास तक होने नही देती जो किसी के भीतर होती है।''

'रक्तबीज' के 'मि. शर्मा' वे जो आगे बढने के लिए रिश्ते नातो की परवाह न करते हुए। आगे बढने की कोशिश करते है। जिनको अपनी उन्नतीके लिए अपनी पत्नी को सिडी बनाना पडता है। ऐसी विकृत मानसिकता रखनेवाले लोग भी इस समाज मे रहते है। 'पोस्टर' नाटक के जमींदार, पटेल भी इसी समाज की उपलब्धी है। जो उनका प्रतिनिधीत्व करते है। जो हजारों सालों से गरीबों पर अन्याय और

अत्याचार करते आये है। जिनके खिलाफ आंदोलन भी होता रहा है। संघर्ष भी होता रहा है। पर इनमें कोई बदलाव नही हुआ ये शोषकों का प्रतिनिधीत्व करनेवाले चरित्र है।

'चेहरे' नाटक के 'भरोसे' और अध्यापिका समाज के ऐसे लोगों के चेहरों के मुखौटे को हटाने की कोशिश करते है। जो पाखण्डी है। ढोंगी है। दूसरो पर अन्याय करना, बलात्कार करना दूसरों को खरीद लेना इनके बाये हाथ काम है। ऐसे लोगों में रहकर समाज सुधार की भूमिका निभानेवाले सहपुरूष पात्र और चरित्र 'भरोसे' है। जिनके जाने के बाद भी उनके अच्छायी की चर्चा होती है।

'अध्यापिकाजी' का भरोसे के प्रति प्रमाणिक विचार रहा है। वह अनेक कार्य में साथ देना चाहती थी उनका यह संवाद ''भरोसेजी मेरे लिए सब कुछ थे। उन्होंने मुझे वह सब कुछ दिया है। जो एक पति अपनी पत्नी को एक मित्र अपने मित्रको और एक गुरु अपने शिष्य को दे सकता है। भरोसेजी मु–ासे विवाह करना चाहते थे लेकिन मैने मना किया मैं नही चहती उनकी प्रतिभा को धक्का लगे।''

'कोमल गंधार' नाटक के माध्यम से 'गांधारी' का चित्रण किया गया है। 'गांधारी' यहाँ नारी की भावना को अभिव्यक्त करनेवाली पात्र है। जिसमें स्त्री की भावनाओं के दमन का रुप चित्रित है। यह वह स्त्री है जिसको पुरूषों ने केवल एक खाली जमीन समझा है। ऐसी स्त्री जो संतान उन्नती के लिए काम आनेवाली है। एक प्रकार से स्त्री का सामाजिक विद्रोह गांधारी के माध्यम से नाटककार ने प्रस्तुत किया है।

'आधी रात के बाद' नाटक में 'चोर' और 'जज' के संवाद के माध्यम से समाज में चोर खुलेआम लोगों की आँखो में धूल झोककर रहनेवालों का चित्रण नाटककार ने किया है। ये ओ लोग है जो कंपनियों के मालिक है। ठेकेदार है डॉक्टर है बडे वर्ग से संबंधित है। जो कितने ही लोगों के जीवन के साथ खेलते है।'' इस प्रकार से शेषजी के नाटकों की मौलिक कथा संवेदना से पता चलता है की उनकी अनुभूति और उनका अध्ययन कैसा रहा है। उनके सभी नाटक बेजोड रहे है।

'हिन्दी रंगमंच' को विकसित एवं समृध्द करने में 'डॉ.शंकर शेष' का योगदान चिरस्मरणीय रहा है। पाठकों और दर्शकों को भी प्रभावित करनेवाला रहा है। पूरे भारतवर्ष में राष्ट्रीय स्तर पर आकाशवाणी, दूरदर्शन और रंगमंच द्वारा 'शंकर शेष' के नाटकों के प्रयोग होते रहे है। शेष के नाटक तत्कालीन भारतीय समाज, धर्म,

राजनीति, सांस्कृतिक आदी से संबंधित विविध प्रमुख समस्याओं को प्रस्तुत कर
में एवं दिशा निर्देशन में प्रभावी है। मध्यम वर्गीय व्यक्ति का जीवन अस्तित्व
संस्कारमय, संघर्षमय, अनेकविध समस्याओं से प्रभावित रहा है। व्यक्ति चेतना,
दलित चेतना, सामाजिक चेतना, और राष्ट्रीय चेतना हेतू 'डॉ.शंकर शेष' के नाटक
महत्वपूर्ण है शेष जी ने कुल मिलाकर २२ नाटक लिखे उन नाटकों में आधुनिक
जीवन का युगबोध और आधुनिक जीवन की सच्चाई चित्रित है। 'हिन्दी रंगमंच' के
नये संस्कारो से युक्त उनके नाटक, प्रयोगशिलता एवं अभिव्यक्ति के तौर पर
लोकप्रिय एवं सरल रहे है। दृश्यबंध, रुपविन्यास ध्वनि, प्रकाश, संगीत और
वेशभूषा आदि में कलात्मक नूतन रंगमंचीय उपकरणों का सफल प्रयोग 'शंकर शेष'
ने किया है।

संदर्भ सूची :

१) शंकर शेष के नाटकों में युगबोध :- डॉ.रमाकांत गावडे
२) डॉ.शंकर शेष आधुनिक हिन्दी के प्रतिनिधी नाटककार :- डॉ.शमली एम.एम
३) नाटककार शंकर शेष :- डॉ.सुनीलकुमार लवटे
४) शंकर शेष समग्र नाटक :- सं.हेमंत कुकरेली
५) शंकर शेष के नाटकों में शेष विशेष :- डॉ.भुक्तरे बळीराम संभाजी